www.anvikshikijournal.com

ISSN 0973-9777
वर्ष - 7 अंक - 1
जनवरी-फरवरी 2013
GISI Impact Factor 0.2310

वर्ष - 7 अंक - 1 जनवरी-फरवरी 2013

भारतीय शोध पत्रिका

आन्वीक्षिकी

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

समृद्धिमय नव वर्ष –2013

एम.पी.ए.एस.वी.ओ.
एम.पी.ए.एस.वी.ओ. एवं आन्वीक्षकी
सदस्य संस्थानों का प्रकाशन

मनीषा प्रकाशन

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

प्रधान सम्पादिका

डॉ. मनीषा शुक्ला,maneeshashukla76@rediffmail.com

पुनर्निरीक्षक संपादक

प्रो. विभा रानी दुबे, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, उ.प्र.,भारत

डॉ. नागेन्द्र नारायण मिश्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद,उ.प्र.,भारत

सम्पादक

डॉ. महेन्द्र शुक्ल, डॉ. अंशुमाला मिश्रा

सम्पादक मण्डल

डॉ. एस. पी. उपाध्याय, डॉ. अनीता सिंह, डॉ. राधा वर्मा, डॉ. प्रभा दीक्षित, डॉ. विशाल अशोक आहेर, डॉ. गीता देवी गुप्ता, ज्योति प्रकाश, डॉ. पद्मिनी रविन्द्रनाथ, डॉ. (श्रीमती) विभा चतुर्वेदी, डॉ. नीलमणि प्रसाद सिंह, डॉ. प्रेम चन्द्र यादव, डॉ. रामनिवास पटेल, डॉ. मुकुल खण्डेलवाल, डॉ. एच. एन. शर्मा, मनोज कुमार सिंह, सरिता वर्मा, उमाशंकर राम, अवनीश शुक्ला, विजयलक्ष्मी, कविता, विनय कुमार पटेल, अर्चना बलवीर, खगेश नाथ गर्ग, मुन्ना लाल गुप्ता

अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार मण्डल

रेव डोडामगोडा सुमनासार (श्रीलंका), वेन केन्डागेले सुमनारांसी थेरो (श्रीलंका), रेव टी धम्मारतना (श्रीलंका), पी.त्रिराची सोडामा (श्रीलंका), फ्रा च्युतिदेश सैन्सोम्बट (बैंकाक,थाईलैंड), फ्रा बूनसर्मस्त्रिथा (थाईलैंड), डॉ. सीताराम बहादुर थापा (नेपाल), मोहम्मद सौरजाई (जाबोल, ईरान), माजिद करीमजादेह (ईराक), डॉ. अहमद रेजा केईखाय फरजानेह (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद जारेई (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद मोजटाबा केयाहफरजानेह (जाहेडान, ईरान), डॉ. होसैन जेनाबदी (सिस्तान एवं बलूचिस्तान, ईरान), मोहम्मद जावेद केयाह फरजानेह (जाबोल, ईरान)

प्रबन्धक

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

सारांश एवं सूचीपत्र

मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र वाराणसी, मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र दिल्ली, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका सूचीपत्र वाराणसी, सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी सूचीपत्र दिल्ली, डी.के.पब्लिकेशन सूचीपत्र दिल्ली, नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस कम्यूनिकेशन एण्ड इन्फारमेशन रिसोर्स सूचीपत्र दिल्ली, नोएडा कॉलेज ऑफ फिज़िकल एजूकेशन सूचीपत्र गौतमबुद्ध नगर

पाठकों से

आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका प्रत्येक दो माह (जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, सितम्बर एवं नवम्बर) पर एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण वाराणसी उ.प्र. भारत द्वारा प्रकाशित की जाती है। एक वर्ष में आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका 6 भाग हिन्दी एवं 6 भाग अंग्रेजी एवं 3 अतिरिक्तांकों के भाग में प्रकाशित की जाती है। डॉक खर्च दर के सम्बन्ध में जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

वार्षिक पाठक मूल्य दर

संस्थागत : भारतीय 4,500+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 1200+51/- डाक शुल्क,वैदेशिक : 6000+डॉक खर्च,एक प्रति 1000+डाक शुल्क व्यक्तिगत : 3,500+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 500+51 डाक शुल्क सहित,वैदेशिक 5000+डाक शुल्क,एक प्रति 1000+डाक शुल्क

विज्ञापन एवं निवेदन

विज्ञापन के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रधान सम्पादिका के पते पर संपर्क करें। आन्वीक्षिकी एक स्ववित्तपोषित पत्रिका है,अत: किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग सराहनीय होगा। कृपया अपनी सहयोग राशि चेक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

सभी पत्राचार निम्नलिखित पते पर ही प्रेषित करें-

बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया,लंका वाराणसी उ.प्र. भारत,पिन कोड 221005 मोबाइल नं. 09935784387, टेलीफोन नं. 0542-2310539.,E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com,www.anvikshikijournal.com

मिलने का समय : 3-5 दिन में(रविवार अवकाश)

पत्रिका संयोजन

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

प्रकाशन

एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण

मनीषा प्रकाशन

(पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008 बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया, लंका वाराणसी उ.प्र. भारत)

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

वर्ष–7 अंक–1 जनवरी–2013

शोध प्रपत्र

धर्म का अर्थ, उपादान, परिभाषा एवं सामान्य धर्म -डॉ. मनीषा शुक्ला 1-3
गीताधर्मो मानवधर्मः -डॉ. गीता देवी गुप्ता 4-7

योग तथा अद्वैतवेदान्तदर्शन में आगमवृत्ति की उपादेयता -उर्वशी श्रीवास्तव 8-11
दिनकर के काव्य में प्रकृति चित्रण -डॉ. मुकुल खण्डेलवाल 12-14

बिहारी की लोकदृष्टि -दिशा पारीक 15-17
दलित साहित्य : अनुभूति का प्रश्न -डॉ. मनीष कुमार जैन 18-22

साहित्य और यथार्थ -जस्सी जोस 23-25
प्राकृतिक संसाधनों के योगक्षेम की वैदिक परम्परा -दिशा पारीक 26-29

हिन्दी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना -डॉ. एच. एन. शर्मा 30-33
कामायनी में प्रकृति-चित्रण -डॉ. मुकुल खण्डेलवाल 34-36

सम्बन्धों के महीन धागों से गुँथी सीताकांत महापात्र की कविताएँ -डॉ. राधा वर्मा 37-42
काव्य सृजन का निहितार्थ प्रयोजन एवं नागार्जुन की काव्यानुभूति -डॉ. वाई. सी. यादव 43-46

बहुजन समाज में राजनीतिक चेतना के नायक मा. कांशीराम जी -डॉ. प्रेम चन्द्र यादव 47-51
बिहार के चुनावों में हिंसा (1952-2004): एक अध्ययन -ब्रजेश कुमार 52-57

नागरिक समाज : एक सैद्धान्तिक विश्लेषण -डॉ. के. डी. सिंह 58-62
लोक कला को प्रभावित करने वाले विविध कारक -मनोज कुमार सिंह 63-66

सूर्योपासना के द्वादश रूप -खगेश नाथ गर्ग 67-71
बिहार में जाति एवं राजनीति (1912-1936): एक अध्ययन -डॉ. मजीद अहमद 72-77

भारतीय समाज में शूद्र एवं दलित वर्ग की आध्यात्मिक चेतना का विकास : एक संक्षिप्त अवलोकन -सुशील कुमार दूबे 78-83
सातवाहन शासकों के सिक्कों का महत्व -मनोज कुमार सिंह 84-86

जैन धर्म में मूर्ति पूजा की समीक्षा -खगेश नाथ गर्ग 87-89
गिजुभाई बधेका के अनुसार शिक्षा के विभिन्न आधारों पर अध्ययन -नवीन कुमार 90-95

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की सांगीतिक यात्रा -सुमिता बनर्जी 96-100
कम्प्यूटर प्रयोगकर्ताओं में फास्ट-फूड के बध्ते प्रयोग का अवलोकन -डॉ. संजय कुमार गुप्ता 101-105

শৈবাল মিত্র :কিছু কথা,কিছু স্মৃতি - তন্ময় মন্ডল ১০৬-১১০
अद्वैत वेदान्त की साहित्यिक एवं दार्शनिक परम्परा -कु. नन्दिनी सिंह 111-113

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777

भारतीय शोध समग्र पत्रिका (2013) **7,111-113**
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 16 नवम्बर 2012

अद्वैत वेदान्त की साहित्यिक एवं दार्शनिक परम्परा

कु. नन्दिनी सिंह*

लेखक का घोषणा-पत्र

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशनार्थ प्रेषित *अद्वैत वेदान्त की साहित्यिक एवं दार्शनिक परम्परा* शीर्षक लेख / शोध प्रपत्र की लेखिका मैं *कु. नन्दिनी सिंह* घोषणा करती हूँ कि लेखिका के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेती हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और साथ ही अपने लेख / शोध प्रपत्र को शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशित होने की स्वीकृति देती हूँ। यह लेख / शोध प्रपत्र मूल रूप में या इसका कोई अंश कहीं और नहीं छपा है और न ही कहीं मैंने इसे छपने के लिए भेजा है। यह मेरी मौलिक कृति है। मैं शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी के सम्पादक मण्डल को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देती हूँ। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक को देती हूँ।

अद्वैतवाद का सैद्धांतिक विकास आचार्य शंकर की विचारधारा में पूर्णत्व की ओर गतिमान प्रतीत होता है। ब्रह्म के अनादि एवं अनन्त होने के कारण उसके रहस्यमय रूप को जानने की स्पृहा आदिकाल से ही विद्यमान रही है। अस्तु, वैदिक साहित्य के अंगभूत-संहिताओं, ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों और उपनिषदों में अद्वैत दर्शन की आधारभूत अभिव्यक्तियाँ उपलब्ध होती है।

वैदिक वांङ्गमय में अद्वैतवाद

संहिताग्रन्थ

ऋग्वेद संहिता में देवताओं के वर्णन में अद्वैतवाद का स्पष्ट आभास मिलता है। ऋग्वेद में एक देवता के वर्णन में उसका स्वरुप सर्वोच्च प्रतीत होता है, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि एक देवता की सर्वशक्तिकता का वर्णन करते समय अन्य देवताओं का महत्व कम हो जाता है। वास्तविकता यह है कि वर्णनकर्ता जिस समय एक देवता का वर्णन करता था, उस समय उसके सामने उसी देवता का स्वरुप सर्वोच्च होता था। यही कारण है कि कहीं पर इन्द्र को सर्वप्रथम सर्वशक्तिमान तो कहीं पर वरुण को और कहीं पर अग्नि को उत्कृष्टतम् कहा गया है। इससे यह संकेत नहीं ग्रहण करना चाहिए कि वर्णनकर्ता की दृष्टि में अन्य देवताओं की सत्ता का स्थान ही नहीं है। दासगुप्त ने सत्य ही कहा है कि देवताओं के अत्युक्तिपूर्ण वर्णन में अद्वैतवादी विचार विद्यमान है। साथ ही देवताओं के पारस्परिक सम्बन्ध एवं स्वतंत्र सत्ता के आधार पर बहुदेववाद का भी समर्थन हुआ है।[1]

ऋग्वेद संहिता के प्रथम मण्डल के 164 वें सूक्त के षष्ठ मन्त्र में षड्लोकों के धारणकर्ता को अजन्मा एवं अद्वितीय बताया गया है।[2] ऋग्वेद के पुरुषसूक्त के अन्तर्गत विराट पुरुष के वर्णन में कहा गया है कि वह सहस्रसिरों, अनन्त चक्षुओं तथा अनन्तचरणों वाला है। सारा ब्रह्माण्ड उसी विराट पुरुष का चतुर्थांश मात्र है।[3] 'नासदीयसूक्त' में कहा गया है कि सृष्टि के आरम्भ में सभी कुछ अज्ञात एवं जलमय था, तुच्छ वस्तु अज्ञान के द्वारा सर्वव्यापी तत्त्व आच्छन्न था। बाद में वही तत्त्व तपस्या के प्रभाव से

* शोध छात्रा, म. गां. काशी विद्यापीठ वाराणसी (उत्तर प्रदेश) भारत

© लेखक 2013, एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण एवं आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित,सर्वाधिकार सुरक्षित मनीषा प्रकाशन। आज्ञा हेतु कृपया सम्पर्क करें : E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com & ijraeditor@yahoo.in, इस प्रपत्र को www.anvikshikijournal.com पर पढ़ें

उत्पन्न हुआ।[4] उसके पश्चात् उसी एक तत्त्व परमात्मा में सृष्टि की इच्छा उत्पन्न हुई।[5] इसी सूत्र के सप्तम् मन्त्र में परमात्मा की ओर संकेत करते हुये बताया गया है कि वह विभिन्न सृष्टियाँ कहाँ से उत्पन्न हुई, इन्हें किसने उत्पन्न किया, किसने नहीं, यह सब वे ही जानते हैं जिनका निवास परमधाम में है अर्थात् सर्वज्ञ परमात्मा ही इस सृष्टि को जानता है, अन्य कोई नहीं।

सामवेद के अन्तर्गत अद्वैतवेदान्त के परम तत्त्व ब्रह्म को सत्य रूप वाला कहा गया है।[6] इसके अतिरिक्त एक दूसरे मन्त्र में ब्रह्म की चर्चा सृष्टि के आदि कारण के रूप में हुई है।

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के प्रथम मन्त्र के अन्तर्गत 'ईशावास्यमिदं सर्वम्' द्वारा भी अद्वैत सत्ता का ही बोध कराया गया है।[7] एक अन्य मन्त्र में परमात्मा को समस्त लोक-लोकान्तरों का वेत्ता बताया गया है। इसके अतिरिक्त यजुर्वेद में विराट पुरुष वर्णन में भी अद्वैत मत परिलक्षित होता है।[8]

अथर्वेद संहिता के अन्तर्गत परमात्मा के अद्वैत रूप का वर्णन मिलता है। कहा गया है कि गुहा रूप सब प्राणियों के हृदय में सत्य, ज्ञान आदि लक्षणवाला ब्रह्म विराजमान है, जिसमें सम्पूर्ण जगत् एकाकार हो जाता है। एक अन्य स्थल पर ब्रह्म की व्यापकता इंगित करते हुए कहा गया है कि वह 'ब्रह्म' ही ब्रह्मा, शिव, हरि, इन्द्र, अक्षर एवं परम तत्त्व का स्वरुप है।[9]

ब्राह्मण ग्रन्थों में अद्वैतवाद

शतपथ ब्राह्मण के अन्तर्गत ब्रह्म का स्पष्ट विवेचन करते हुये कहा गया है कि सृष्टि के आरम्भ में यह जगत् ब्रह्मरुप ही था।[10] इसी ने पहले देवताओं की सृष्टि की और फिर उन्हें भिन्न-भिन्न लोकों का स्वामित्व प्रदान किया।[11]

इसके अतिरिक्त ऐतरेय ब्राह्मण में भी परमात्मा का विराट रूप में वर्णन किया गया है।[12] तैत्तिरीय ब्राह्मण में ऋग्वेद की इस जिज्ञासा[13] कि किस काष्ट और किस वृक्ष से स्वर्ग एवं भूलोक की सृष्टि हुई, के समाधान में कहा गया है कि ब्रह्मरुप काष्ट एवं ब्रह्मरुप वृक्ष से ही स्वर्ग एवं भूलोक का निर्माण हुआ है।[13] उक्त कथन से ब्रह्म की जगत कारणता का तथ्य स्पष्ट होता है, जिसे अद्वैत वेदान्त की विचारधारा का सैद्धांतिक आधार माना जा सकता है।

आरण्यक ग्रन्थों अद्वैतवाद

ऐतरेय आरण्यक में कहा गया है कि सच्चिदानन्दरुप परमात्मा ही सम्पूर्ण जगत् का कारण है और वही पाषाणादि औषध्यादि एवं जगत के प्राणियों में क्रमशः अपने को प्रकट करता है।[14] सृष्टि के प्रारम्भ में केवल आत्मा की सत्ता थी जिसमें लोकों की सिसृक्षा की ओर तत्पश्चात् लोकों की सृष्टि की।[15] वहीं ब्रह्म, ब्रह्मा, शिव, हरि, इन्द्र और परम तत्त्व है, वह स्वयं प्रकाशित है।[16] परब्रह्म की सत्ता को सिद्ध करते हुये अन्यत्र कहा गया है कि वह ही अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र, जल और प्रजापति हैं ''तदेवाग्निस्तद्वायुस्तत् सूर्यस्तदस्ति चन्द्रमाः। तदेव शुक्रं तद ब्रह्म तत् आपस्तत् प्रजापतिः।।''[17]

उपनिषदों में अद्वैतवाद

भारतीय अध्यात्म चिन्तन की पराकाष्ठा हमें उपनिषदों में ही परिलक्षित होती है। सर्वगुणातीत अक्षर ब्रह्म के रुप में परम तत्त्व विषयक औपनिषदिक चिन्तन इतना मौलिक और विस्तृत है कि उसे मानव चिन्तन का पूर्णविराम माना जा सकता है। सर्वप्रथम सर्वगुणातीत, सर्वान्तरयामी परमात्मा (परम तत्त्व) को ब्रह्म के रुप में अनुभूत और अभिव्यक्त करने का श्रेय इन उपनिषदों को ही है। उपनिषदों की उदात्त आध्यात्मिक विवेचना और संमुन्नत दार्शनिक विचारधारा ने विश्व के अनेक विद्वानों को प्रभावित किया है।

प्रो. मैकेन्जी का कहना है कि सृष्टि विज्ञान के क्रमिक सिद्धांत का प्राचीनतम् प्रयत्न वह है जो उपनिषदों में व्यक्त किया गया है।[18] ब्लूमफील्ड के अनुसार हिन्दू दर्शन का ऐसा महत्वपूर्ण रुप कोई नहीं है जो बीजरुप में उपनिषदों में न विद्यमान हो।[19] डायसन ने वेदान्त सूत्र को औपनिषद सिद्धांत का सूक्ष्म संग्रह माना है।[20] प्रो. गफ का मत है कि शंकराचार्य की विचारधारा उपनिषद् की ही स्वभाविक चिन्ताभिव्यक्ति है।[21]

उपनिषदों के मूलभूत प्रतिपाद्य विषय आत्मा और ब्रह्म (परमात्मा) है। यही कारण है कि उपनिषदों को ब्रह्म विद्या भी कहा जाता है। ब्रह्म क्या है, ब्रह्म और जीवात्मा में क्या सम्बन्ध है, ब्रह्म से जगत की सृष्टि कैसे होती है, ब्रह्म का साक्षात्कार कैसे हो सकता है आदि जिज्ञासाओं का समाधान उपनिषदों में उपलब्ध है।

अस्तुवेदान्त के आधारभूत विषय ब्रह्म, आत्मा, जीव, जगत एवं मोक्ष आदि के वैचारिक बीज उपनिषदों में किस रुप में उपलब्ध है, इसका विवेचन प्रासंगिक प्रतीत होता है।

संदर्भग्रन्थ सूची

[1] दासगुप्त -इण्डियन फिलासिपी, वाल्यूम।, पृष्ठ संख्या 19.

[2] *ऋग्वेद संहिता,* 10/121/1-10.

[3] *ऋग्वेद संहिता,* 10/90/1.

[4] *ऋग्वेद संहिता,* 10/129/3.

[5] *कामस्तदग्रे समवर्तत।* ऋग्वेद संहिता, 10/129/3.

[6] *सामवेद,* 6/3/4/10, (श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा सम्पादित ज्ञायत्री तपोभूमि मथुरा, 1960).

[7] *यजुर्वेद,* 3/15.

[8] *यजुर्वेद,* 32/10.

[9] *अथर्वेद संहिता,* 4/1/1/1.

[10] *शतपथ ब्राह्मण,* 11/2/3/1.

[11] *शतपथ ब्राह्मण,* 11/2/3/1. (हरि स्वामी की टीका).

[12] *ऐतरेय ब्राह्मण,* प्रथम भाग, पृष्ठ संख्या 28, आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थ माला, बनारस.

[13] *ऋग्वेद,* 10/31/4.

[14] *तैत्तिरीय ब्राह्मण,* 1/8/9/6.

[15] *ऐतरेय आरण्यक* -डॉ. मंगलदेव शास्त्री -पर्यायलोचन पृष्ठ संख्या 35.

[16] ऐतरेय आरण्यक, 2/3/1.

[17] *तैत्तिरीय आरण्यक,* 10/11/2.

[18] *तैत्तिरीय आरण्यक,* 10/1/2.

[19] *ईसावास्योपनिषद्,* वाल्यूम -8, पृष्ठ संख्या 597.

[20] *द रिलीजन ऑफ द वेद,* पृष्ठ संख्या 51.

[21] डायसन -फिलासिफी ऑफ उपनिषद्, पृष्ठ संख्या 27.

[22] *फिलासिफी ऑफ उपनिषद्,* पृष्ठ संख्या 8.

लेखकों के लिए निर्देश

शोधपत्र का अनुरोध

लेखक अपना शोधपत्र डॉ. मनीषा शुक्ला ,प्रधान सम्पादिका आन्वीक्षिकी भारतीय शोध पत्रिका को ई-मेल पर प्रेषित करें। (maneeshashukla76@rediffmail.com)

प्राप्त शोधपत्र पत्रिका में प्रकाशन के पूर्व पुनर्निरीक्षित किये जायेंगे। स्वीकृत शोधपत्र कहीं और प्रकाशित नहीं होना चाहिए और न ही उस शोधपत्र का कोई भी भाग प्रधान सम्पादिका के अनुमति के बिना कहीं और प्रकाशित किया जा सकता है। कृपया अपने शोधपत्र की पाण्डुलिपि निम्न भागों में तैयार करें,शीर्षक ;सारांश ;पाण्डुलिपि ;पुस्तक संदर्भ सूची। कृपया पुनर्निरीक्षण की गुणवत्ता में सहायता करने हेतु अपना नाम पता पाण्डुलिपि पर न दें।

शीर्षक :शीर्षक पाण्डुलिपि पर अवश्य दें,किन्तु अपना पूरा नाम,पता,संस्था जहाँ पर अध्ययन अथवा अध्यापन कार्य सम्पादित किया गया हो, आपका विषय,दूरभाष अथवा मोबाइल,फैक्स,ई-मेल पत्राचार हेतु अलग पृष्ठ पर अवश्य दें। उपर्युक्त तथ्य आपके शोधपत्र के शब्द सीमा के अन्तर्गत ही माना जायेगा।

सारांश :कृपया शोधपत्र का सारांश 120 शब्दों में दें।

पाण्डुलिपि :इसके अन्तर्गत मुख्य पाठ्य सामग्री होगी ; जो 5 से 10 पृष्ठ तक होनी चाहिये। शोधपत्र 10 पृष्ठ से (सारांश,शब्द संक्षेप,संदर्भ सूची समेत)अधिक प्रकाशन हेतु स्वीकार नहीं किया जायेगा। अन्यथा वृहद् शोधपत्र(10 पृष्ठ से अधिक) प्रकाशन में देर भी हो सकती है। लेखक को यह बात स्वीकार होनी चाहिए कि शोधपत्र पुनर्निरीक्षण के दौरान किये गये संशोधन उन्हें मान्य होंगे। शोधपत्र प्रकाशन के दौरान त्रुटि की सम्भावना न बने इसका पूरा ध्यान रखा जाता है फिर भी कोई त्रुटि पाये जाने पर लेखक संशोधित रीप्रिंट प्राप्त कर सकता है ; पत्रिका में संशोधन की व्यवस्था नहीं है।

सन्दर्भ वर्णमालाक्रामानुसार :शोधपत्र के समापन पर कृपया संदर्भ वर्णमाला क्रमानुसार दें। पत्रिका का वर्ष,लेखक, पृष्ठ संख्या,भाग इत्यादि विस्तार से दें। पुस्तक शीर्षक या पत्रिका शीर्षक इटालिक दें।

पुस्तक :प्रकाशक का नाम,संस्करण संख्या,प्रकाशन वर्ष,लेखक का नाम,पुस्तक का नाम,पृष्ठ संख्या

पत्रिका :पत्रिका का नाम,लेख का शीर्षक,लेखक का नाम,प्रकाशक का नाम,अंक संख्या/माह,वार्षिक अथवा अर्द्धवार्षिक अथवा मासिक जो भी हो स्पष्ट करें।

समाचार पत्र :प्रकाशक,तिथि,सन् ,पृष्ठ संख्या,

इण्टरनेट :वेबसाइड,पृष्ठ संख्या,मुख्य शीर्षक,अन्त: शीर्षक।

मानचित्र एवं सारणी :मानचित्र एवं सारणी अथवा चित्र शोधपत्र की समाप्ति के अन्त में दें। यह ब्लैक एण्ड व्हाइट ही होना चाहिए। इसका स्पष्ट संकेत पाण्डुलिपि में दें(उदाहरण सारणी संख्या 1)

विशेष :कृपया अपना शोधपत्र ई-मेल करने के बाद डॉक से अवश्य भेजें। अपने शोधपत्र के साथ-साथ अपना वायोडाटा, फोटो,स्वपता लिखा लिफाफा(25 रू के टिकट सहित)भेजें। शोधपत्र यदि हिन्दी भाषा में है तो ए.पी.एस प्रियंका रोमन(ए.पी.एस. कार्पोरेट 2000++)में तैयार सी.डी के साथ दें। शोधपत्र प्राप्त होने के एक सप्ताह के अन्दर लेखक को स्वीकृति पत्र प्रेषित कर दिया जायेगा। ई-मेल से प्राप्त शोधपत्र हेतु ई-मेल से स्वीकृति भेजी जायेगी। शोधपत्र प्रेषित करने के पूर्व प्रधान सम्पादिका से दूरभाष पर अवश्य सम्पर्क करें। सम्पादक मण्डल अथवा सलाहकार समिति में सम्मिलित करने का अंतिम निर्णय संस्था का होगा।

सदस्यों से निवेदन है कि वर्ष में 20 सदस्य पत्रिका से जोड़कर संस्था का सहयोग करें।

IJRA

www.onlineijra.com

ISSN 0973-9777

09739777

₹ 1200/-